रूप से समाजीकरण नहीं कहलाता है। समाजीकरण में उन्हीं चीजों का सीखना सम्मिलित होता है जो अखण्ड सामाजिक अन्तःक्रिया (sustained social interaction) के लिए आवश्यक है।" इसका मतलब यह हुआ कि यदि व्यक्ति एक सभ्य समाज में पाले-पोसे जाने पर भी चोरी करना सीखता है, तो इस तरह का सीखना समाजीकरण में सम्मिलित नहीं किया जायेगा क्योंकि यह समाज के नियमों द्वारा अनुमोदित नहीं है और इससे सामाजिक अन्तःक्रिया की अखण्डता पर बुरा असर पड़ता है।

(ii) समाजीकरण चूँकि समाज के मानकों (norms) तथा मूल्यों (values) से सम्बन्धित होता है, अतः इस पर समय एवं स्थान का काफी प्रभाव पड़ता है। जैसा कि हम जानते हैं, सामाजिक मानक (social norms) तथा सामाजिक मूल्य (social values) सदा एक समान नहीं रहते हैं। समय के साथ इसमें परिवर्तन होता जाता है। फलस्वरूप, समय बदलने से व्यक्ति को बदले हुए सामाजिक मानकों एवं मूल्यों के अनुसार सामाजिक व्यवहार को सीखना पड़ता है। जैसे—भारतीय समाज का ही उदाहरण ले लीजिए। आज से 50-60 वर्ष या इससे और पहले स्त्रियों को परदा करना या घूँघट करना सिखलाया जाता था परन्तु वर्तमान समय में इन्हें ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। चूँकि भिन्न-भिन्न जगहों में सामाजिक मानक एवं मूल्य अलग-अलग होते हैं, अतः समाजीकरण की प्रक्रिया में भी स्थान में परिवर्तन होने से कुछ भिन्नता दिखलाई देती है। जैसे—भारत में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पत्नी पति को हमेशा 'आप' कहकर सम्बोधित करती है।

(iii) समाजीकरण में सांस्कृतिक आत्मसात्करण (cultural assimilation) तथा सांस्कृतिक संचरण (cultural transmission) की प्रक्रिया सम्मिलित होती है। इस पक्ष पर अन्य लोगों की तुलना में किम्बल यंग (Kimball Young) ने सबसे अधिक बल डाला है। समाजीकरण में समाज के सांस्कृतिक मानकों (cultural norms) तथा संस्कृति के अन्य तत्त्वों को आत्मसात् (assimilate) किया जाता है। इतना ही नहीं, समाजीकरण द्वारा समाज की नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से उसकी संस्कृति को ग्रहण करता है और फिर उसी संस्कृति को उसके बाद की पीढ़ी के द्वारा ग्रहण किया जाता है। इस तरह से समाज में सांस्कृतिक संचरण (cultural transmission) समाजीकरण द्वारा होता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति समाजीकरण द्वारा अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से भली-भाँति परिचित हो जाता है।

(iv) समाजीकरण में व्यक्त के अहम् या आत्म (self) का विकास होता है। जब वह समाज के अन्य लोगों के साथ अन्तःक्रिया (interaction) करता है तो इससे उसे दूसरे लोगों के अलावा स्वयं को भी समझने का मौका मिलता है। सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord & Backman) की परिभाषा में इस पक्ष पर अधिक बल डाला गया है क्योंकि इन लोगों ने समाजीकरण को एक अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया (interactional process) माना है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण सामाजिक सीखना (social learning) की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से प्रभावित होकर अपने अहम् या आत्म (self) को उनके मानकों (norms) एवं मूल्यों (values) के अनुसार विकसित करता है।

समाजीकरण की अवस्थाएँ
(Stages of Socialization)

समाजीकरण, जैसा कि ऊपर कहा गया है, एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती है। ऐसा समझना सर्वथा भूल होगी कि समाजीकरण अर्थात सामाजिक सीखने (social learning) की

Scanned by CamScanner

प्रक्रिया सिर्फ बचपनावस्था में ही होती है। डीफ्लीयूर, डी, एन्टोनियो तथा डीफ्लीयूर (DeFleur, D' Antonio & DeFleur, 1970) ने स्पष्टतः कहा है कि समाजीकरण की प्रक्रिया समाज की बदलती प्रत्याशाओं (expectations) एवं माँगों (demand) के प्रति समायोजन की एक निरन्तर प्रक्रिया (continuing process) है। समाज मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों (sociologists) ने कुछ अवस्थाओं (stages) का वर्णन किया है जिसके सहारे समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु (death) तक निरन्तर चलती रहती है। इन अवस्थाओं को निम्नांकित 6 भागों में बाँट गया है—

(i) मुखावस्था (Oral stage)
(ii) गुदावस्था (Anal stage)
(iii) अव्यक्तावस्था (Latency stage)
(iv) किशोरावस्था (Stage of adolecence)
(v) वयस्कावस्था (stage of adulthood)
(vi) वृद्धावस्था (Stage of old age)

इन सभी अवस्थाओं का वर्णन इस प्रकार से किया जा सकता है—

(i) मुखावस्था *(Oral stage)*—यह अवस्था जन्म से प्रारम्भ होकर एक साल की उम्र तक की होती है। इस अवस्था में बच्चा मूलप्रवृत्ति (instinct) के कारण भूख या प्यास लगने पर रोता है तथा हाथ-पैर फेंकता है। रोने पर माँ उसे दूध या पानी पिलाती है। दूध से उसकी भूख मिटती है तथा पानी से प्यास। माँ के इस तरह के व्यवहार से बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन आता है और वह कुछ नये सामाजिक व्यवहार को करना सीख लेता है। जैसे—एक खास समय पर प्रायः इस उम्र के बच्चे रोना सीख लेते हैं। रोकर वे अपनी भूख-प्यास आदि का संकेत माँ को दे देते हैं। इस तरह से बच्चा माँ के व्यवहारों के साथ समायोजन करना सीख लेता है। जिन बच्चों में इस तरह से समायोजन करने की क्षमता किसी कारण नहीं विकसित होती है उनका समाजीकरण इस अवस्था में तो अविकसित रहता है, साथ-ही-साथ आगे की भी अवस्थाओं में दबा हुआ रहता है।

(ii) गुदावस्था *(Anal stage)*—यह अवस्था एक साल से छः साल तक की होती है और इस अवस्था में बच्चे सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार तथा प्रतिबन्धित व्यवहार में अन्तर को समझने लगते हैं। इस अवस्था के पहले की अवस्था में बच्चे पूर्णतः माता-पिता पर अपने प्रत्येक कार्य के लिए निर्भर रहते हैं परन्तु इस अवस्था में बच्चों में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की इच्छा विकसित हो जाती है। उन्हें अच्छे-बुरे का ज्ञान होने लगता है और इस तरह से उनमें सामाजिक विभेद (social discrimination) करने की क्षमता विकसित हो जाती है। कभी-कभी देखा गया है कि कुछ माता-पिता बच्चों को स्वतंत्र होकर कोई कार्य नहीं करने देते हैं क्योंकि उन्हें वे उस कार्य के लिए पूर्णतः परिपक्व (mature) नहीं मानते हैं। दूसरी तरफ ऐसा भी कभी-कभी होता है कि माता-पिता बच्चों के सामने इतना ऊँचा मानक (standard) रख देते हैं कि बच्चा वहाँ तक अपनी पूरी कोशिश और क्षमता के बाद भी नहीं पहुँच पाते हैं। अधिकतर समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है कि ये दोनों ही तरह की परिस्थितियाँ यदि प्रतिकूल न होकर अनुकूल (favourable) हुई तो इनसे बच्चों में आत्मविश्वास पनपता है और वह अधिक-से-अधिक सामाजिक कार्यों में हाथ बँटा कर भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक व्यवहार को तेजी से सीख लेता है।

(iii) अव्यक्तावस्था *(Latency stage)*—यह अवस्था 7 साल से प्रारम्भ होकर 12 साल तक की होती है। इस अवस्था में बच्चों का सामाजिक वातावरण काफी विस्तृत हो जाता है। वह स्कूल

Scanned by CamScanner

जाना प्रारम्भ कर देता है तथा घर के बाहर अपने उम्र के साथियों की टोली (peer group) का भी निर्माण कर लेता है। फलस्वरूप, ऐसे बच्चों की सामाजिक क्रियाएँ (social activities) काफी बढ़ जाती है। इस अवस्था में वह समाज के नियमों, रूढ़ियों आदि को समझने लगता है और उसके अनुसार व्यवहार करने लगता है। स्कूल जाने से उनमें अपने संस्कृति के शिल्पवैज्ञानिक तत्त्वों (technological elements) से अवगत होने का भी मौका मिलता है और उसे वे आत्मसात् करने की कोशिश करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चों में अपने धर्म, प्रजाति (race), यौन (sex) के प्रति चेतना उत्पन्न हो जाती है और वे इनसे संबंधित सामाजिक व्यवहार को सीखने में काफी अभिरुचि दिखलाते हैं। इस तरह के आत्मसात्करण (assimilation) का यह परिणाम होता है कि प्रत्येक बच्चा अपनी जाति, धर्म तथा संस्कृति को दूसरे व्यक्तियों की जाति, धर्म एवं संस्कृति की तुलना में श्रेष्ठ मानने लगता है।

(iv) किशोरावस्था *(Stage of adolesence)*—यह अवस्था 13 वर्ष से प्रारम्भ होकर 19 साल तक की होती है। इस अवस्था में किशोरों एवं किशोरियों के सामने अनेक नयी परिस्थितियाँ तथा समस्याएँ आ खड़ी होती हैं जिनके साथ उन्हें समायोजन (adjustment) करना पड़ता है। इस अवस्था में उनमें शारीरिक परिवर्तन काफी होते हैं जिनके साथ भी उन्हें समायोजन करना सीखना होता है। इस तरह से किशोरावस्था में अनेकों तरह के परिवर्तन आते हैं जिनके साथ समायोजन करने के लिए उन्हें नये-नये सामाजिक व्यवहार भी सीखना पड़ता है। जैसे—इस अवस्था के प्रारम्भ होने के पहले बच्चा माँ के प्रति प्यार दिखलाने के लिए निस्संकोच होकर उनसे लिपट जाता था लेकिन अब उसे इसी प्यार को दिखलाने के लिए कुछ नये ढंग का व्यवहार सीखना होता है। इतना ही नहीं, इस अवस्था के पहले वह निस्संकोच अपने पिता की गोद में बैठकर उनके प्रति अपना प्यार दिखलाता था परन्तु अब वह पिता के साथ भी ऐसा करने के लिए, कुछ नये व्यवहार को सीखता है। लड़कियों में भी कुछ इसी तरह की समस्याएँ आती हैं। उसे माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों, सहेलियों के प्रति प्यार जताने के लिए पहले के तरीकों को छोड़कर कुछ नये ढंग का व्यवहार सीखना पड़ता है। इसके पहले की अवस्था में अपने उम्र के लड़कों के साथ निस्संकोच होकर वे खेल लिया करती थीं परन्तु अब उन्हें इन लोगों के साथ मिलने या खेलने में कुछ लज्जाशीलता बढ़ जाती है। फलस्वरूप, उन्हें कोई नया तरीका ढूँढ़ना पड़ता है। इस अवस्था में शारीरिक परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न प्रत्याशाएँ (expectation) तथा समस्याएँ इतनी जटिल होती हैं कि किशोरी को उचित मार्ग दर्शन नहीं होने पर समाजीकरण की अनेक असफलताएँ उनके सामने आने लगती हैं। यह वह अवस्था है जहाँ किशोरों एवं किशोरियों में विपरित लिंग के व्यक्तियों के प्रति रुचि भी बढ़ने लगती है।

(v) वयस्कावस्था *(Stage of adulthood)*—यह अवस्था 20 वर्ष से प्रारम्भ होकर लगभग 55 साल तक होती है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने इसे दो भागों में बाँटा है—युवा वयस्कावस्था (young adulthood) तथा मध्यवयस्कावस्था (middle adulthood)। युवावस्था 20 साल से 35 साल तक की मानी गयी है। इस अवस्था में युवक की शादी हो जाती है और वह पारिवारिक जीवन प्रारम्भ कर देता है। वह कुछ धंधा या नौकरी भी जीविकोपार्जन के लिए भी प्रराम्भ कर देता है। इस अवस्था में व्यक्ति के सामने अनेकों महत्त्वपूर्ण समस्याएँ आती हैं जिनके साथ उन्हें समायोजन (adjustment) करना होता है। इस तरह के समायोजन करने में वह बहुत-से नये व्यवहारों को सीखता है जिनमें प्रमुख हैं—दूसरों के साथ किस ढंग से घनिष्ठ सम्बन्ध (intimate relationship) कायम करना चाहिए। इस तरह की घनिष्ठता से व्यक्ति में समाजीकरण तेजी से होता है और उसका सामाजिक

Scanned by CamScanner

वातावरण (social environment) काफी विस्तृत हो जाता है। मध्यवस्कावस्था (middle adulthood) में आने पर व्यक्ति में नयी पीढ़ी के व्यक्तियों के कल्याण की चिन्ता अधिक हो जाती है। ऐसे व्यक्तियों में दूसरों का मार्गदर्शन करने की प्रेरणा अधिक होती है। इस तरह के मार्गदर्शन में उन्हें भी कुछ नयी चीजें सीखने को मिलती हैं तथा नये-नये अनुभव होते हैं। परिवार में उन्हें अपने बहू-बेटियों, नाती-पोतों के साथ समायोजन भी करना होता है। फलस्वरूप, वे अपने व्यवहार में परिवर्तन कर कुछ नया व्यवहार सीखते हैं जिससे उनका समाजीकरण होता है। जैसे—पहले वे घर के किसी कमरे में निस्संकोच होकर प्रवेश कर जाते थे; परन्तु पुत्र-वधू के होने पर वे ऐसा नहीं करते हैं और आवाज देकर ही घर से प्रवेश करना अधिक उचित समझते हैं।

(vi) वृद्धावस्था *(Stage of old age)*—यह अवस्था 55 साल के बाद की होती है। इस अवस्था में व्यक्ति में शारीरिक शक्ति कम हो जाती है और व्यक्ति सामान्यतः अवकाशकालीन जीवन (retired life) व्यतीत करता है। वह अपने आप को एक पके हुए आम के फल के समान समझता है। जैसे एक पके हुए आम का फल वृक्ष से किसी भी क्षण टपक कर धरती पर आ सकता है, उसी तरह से वह समझता है कि किसी भी दिन वह मृत्यु की गोद में लुढ़क सकता है। इस वृद्धावस्था की बदलती हुई हालत में भी वह बहुत-सी नयी चीजों को सीखता है जिनसे उसका समाजीकरण होता है। इस अवस्था में उसे जीवन व्यतीत करने के लिए आत्मनियंत्रण (self-control) की आदत डालनी होती है। उसे किस प्रकार का भोजन करना चाहिए, कैसा पोशाक पहनना चाहिए आदि बातों का काफी ख्याल करना पड़ता है और इस सिलसिले में वह कई तरह के सामाजिक व्यवहारों को सीखता है।

इस तरह से हम देखते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के बाद से वृद्धावस्था तक होती रहती है। यह किसी उम्र या अवस्था पर आकर रुकती नहीं है। प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति के सामने कुछ नयी परिस्थितियाँ एवं नयी-नयी समस्याएँ आती हैं जिनके साथ उन्हें समायोजन करना होता है और इसी सिलसिले में वह कुछ नये-नये व्यवहारों को सीखता जाता है।

Scanned by CamScanner